चौथे अध्याय में तो वे स्वयं कहते हैं, ''अजन्मा होते हुए भी धर्म की स्थापना के लिए मैं इस पृथ्वी पर प्रकट होता हूँ।'' वे आदिपुरुष हैं; उनका कोई कारण नहीं है, क्योंकि वे सब कारणों के परम कारण हैं; सब कुछ उन्हीं से उत्पन्न हुआ है। यह पूर्ण ज्ञान केवल भगवत्कृपा से हो सकता है।

श्रीकृष्ण की महती कृपा के बल पर अर्जुन ने यहाँ अपना मनोभाव प्रकट किया है। यदि भगवद्गीता को वास्तव में समझना हो तो इन दो श्लोकों में वर्णित सत्य को स्वीकार करना होगा। इसी का नाम परम्परा है। जो परम्परा में नहीं है, वह गीता के मर्म को कभी नहीं समझ सकता। विश्वविद्यालय से मिलने वाली नाममात्र की शिक्षा का विषय यह नहीं है। दुर्भाग्यवश, विद्या के घमण्डी मनुष्य वैदिक शास्त्रों के प्रचुर प्रमाणों को न मानकर अपने इस दुराग्रह पर ही हठपूर्वक अड़े रहते हैं कि श्रीकृष्ण साधारण मनुष्य हैं।

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।।१४।।

सर्वम्=सब को; **एतत्**=इस; **ऋतम्**=सत्य; **मन्ये**=मानता हूँ; **यत्**=जो कुछ भी; **माम्**=मेरे प्रति; **वदसि**=आप कह रहे हैं; **केशव**=हे कृष्ण; **न**=नहीं; **हि**=निःसन्देह; **ते**=आप के; **भगवन्**=हे भगवन्; **व्यक्तिम्**=स्वरूप को; **विदुः**=जानते हैं; **देवाः**=देवता; **न**=नहीं; **दानवाः**=असुर।

अनुवाद

हे कृष्ण ! मुझ से आपने जो कुछ भी कहा है, इसे मैं सम्पूर्ण रूप से सत्य मानता हूँ। हे भगवन् ! आप के स्वरूप को न तो देवता जानते हैं और न दानव ही जानते हैं।।१४।।

तात्पर्य

अर्जुन का प्रमाण है कि श्रद्धाशून्य, आसुरी स्वभाव वाले मनुष्यों को श्रीकृष्ण का ज्ञान नहीं हो सकता। जब देवता तक उन्हें नहीं जानते, फिर इस आधुनिक जगत् में विद्वान् कहे जाने वाले मूढ़ों के विषय में तो कहना ही क्या है? भगवत्कृपा से अर्जुन जान गया है कि श्रीकृष्ण पूर्ण परमसत्य हैं। अतएव मनुष्यमात्र को अर्जुन के पथ का अनुगमन करना चाहिये, इसलिए कि उसे भगवद्गीता का अधिकार मिला है। जैसा चौथे अध्याय में कह आए हैं, भगवद्गीता के ज्ञान की शिष्यपरम्परा कालान्तर में नष्ट हो गयी थी; इसलिए अर्जुन को शिष्य बना कर श्रीकृष्ण ने उसी परम्परा का पुनरुत्थान किया। इसके लिए उन्होंने अर्जुन को ही चुना, क्योंकि वह उनका स्नेहभाजन अंतरंग सखा और कृपापात्र परम भक्त था। अतएव, जैसा गीतोपनिषद् के अन्तर्दर्शन में कहा है, गीता को शिष्यपरम्परा के अनुसार ही धारण करना चाहिए। कालान्तर में, जब वह परम्परा विशृंखलित हो गयी तो उसके पुनरुत्थान के लिए अर्जुन को पात्र बनाया गया। श्रीकृष्ण ने जो कुछ भी कहा, अर्जुन ने उसे सम्पूर्ण रूप से ग्रहण कर लिया। सबको ऐसा करना चाहिए। तभी भगवद्गीता के सार-सर्वस्व